JAMNALAL BAJAJ
FOUNDATION

श्रीमती इंदिरागांधी
प्रधानमंत्री, भारत
मुख्य अतिथि –१९८२

जमनालाल बजाज का संबंध पूज्य बापूजी के साथ था ही लेकिन हमारे परिवार के साथ भी काफी था। मुझे मेरे बचपन में एक भी दिन ऐसा याद नहीं आता है कि मैंने उनको, उनके परिवार के लोगों को–जानकी देवी को देखा नहीं। गांधीजी ने इस देश में अनेक लहरें शुरू कीं। उनमें से आजादी का आंदोलन सबसे बड़ा आंदोलन था। लेकिन उन्होंने शुरू से यह बतलाया कि यदि रचनात्मक कार्य संग संग नहीं होता है तो आजादी के आंदोलन को बल नहीं मिलेगा और आजादी के बाद जो विकास करना है और जिस ध्येय के लिये हम स्वतंत्रता चाहते हैं उसको हम पूरा नहीं कर सकेंगे। इसलिये रचनात्मक कार्य को उन्होंने बहुत महत्व दिया और वह देश के प्रगति की एक बुनियाद बनी। इसलिये जो काम जमनालाल बजाज प्रतिष्ठान कर रहा है कि हर वर्ष कुछ ऐसे क ार्यकर्ताओं को पुरस्कार दे ताकि हम उस काम को देश के सामने लाएं और दूसरे लोग ऐसे काम करें, उनकी दिखाई हुई दिशा पर चलें और उनकी दिखाई गई रोशनी का लाभ उठायें। यह एक बहुत महत्वपूर्ण काम यह प्रतिष्ठान कर रहा है।

आज जिन तीन व्यक्तियों को पु रस्कार मिले उनके बारे में और उनके काम के बारें में, उनके व्यक्तित्व के बारे में बतलाया ही गया है, इसलिये उसे दोहराने की जरूरत नहीं है। में बधाई क्या दूं? क्योंकि सब ऐसे हैं कि हम बजाय बधाई देने के उनसे आशीर्वाद मांग सकते हैं। यह समय है कि देश में क्या बीत रहा है और पूज्य बापूजी की क्या विचार धारा थी इसका विचार करें। स्त्री शक्ति एक महान शक्ति है। गांधीजी का इतना बड़ा व्यक्तित्व था, वे इतनी दिशाओं में आगे बढ़े लेकिन सबसे बड़ी चीज़ यह थी कि लोगों में कौन सी शक्ति बनी हुई है और उसे क्या उभारें यह खोज नि कालते थे। यह उनकी मेरे ख्याल से देश को सबसे बड़ी देन थी।